SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 2, Issue-2, April to June : 2024
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

मैत्रेयी पुष्पा और उनकी आत्मकथा'कस्तूरी कुण्डल बसै'

प्रा. डॉ. भरतकुमार वी. भेडा

➢ ***सारांश:***

"कस्तूरी कुण्डल बसै" बहुचर्चित लेखिका मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा है | दरसअल यह उनके जीवनानुभवों का पुलिंदा हैं | वास्तव में यह स्वयं और उनकी माँ की कहानी हैं | शीर्षक "कस्तूरी कुण्डल बसै' और उपशीर्षकों – 'दुलहिन गाओ री मंगलाचार', 'जो घर जारै अपनों', 'उलट पवन कहाँ रखिए' | कबीर की इन पंक्तियों के माध्यम से यह संकेत तो अवश्य मिलता है कि निजी जीवन अनुभवों का खटापन ही रचनात्मक आयाम को निखारते हैं | स्त्री विमर्शात्मक अभिगम को अपनाकर चलने वाले साहित्यकार के लिए मैत्रेयी पुष्पा की प्रस्तुत आत्मकथा वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं |

➢ ***चाबी रूपी शब्द :***
आत्मकथामक, स्त्री-विमर्श, कस्तूरी, कुंडल, उपशीर्षक, जीवनानुभवों,

वस्तुतः उत्तर आधुनिककाल में सबसे ज्यादा चर्चित महिला लेखिकाओं का साहित्य और उनके व्यक्तित्व का प्रभाव स्पष्टतया दृष्टिपात होता रहा हैं | अधिकत्तर महिला लेखिकाओं ने अपनी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से नारी-विमर्श को प्रस्थापित करने का अथाक प्रयास किया हैं | महिला लेखिकाओं की स्व पीड़ा, घुटन, संत्रास क्या हैं ? भोगे हुए यथार्थ की दास्ताँ-ए-जुबान क्या कहती हैं ? आदि बातों का विस्तार उनके आत्मकथात्मक साहित्य में बुना गया है | हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों की आत्मकथाएँ बहुत चर्चित रही हैं | चाहे वह जानकी देवी बजाज की "मेरी जीवन-यात्रा",अमृता प्रीतम की "रसीदी टिकट",कृष्ण अग्निहोत्री की "लगता नहीं दिल मेरा" और "और..और औरत",कुसुम अंचल की "जो कहा नहीं गया",शिवानी की "सुनहु तात यह अमर कहानी" और "सोने दे;एक थी रामरती", रमणिका गुप्ता की "हादसे", सुनीता जैन की'शब्दकाया", मन्नू भंडारी की "एक कहानी यह भी", प्रभा खेतान की "अन्या से अनन्या", मृदुला गर्ग की "राजपथ से लोकपथ पर", चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की "पिंजरे की मैना", अनीता राकेश की "संतरे और संतरे", ममता कालिया की "कितने शहरों में कितनी बार", चन्द्रकान्ता की "हासिये की इबारतें", इस्मत चुगताई की "कागजी है पैरहन", निर्मला जैन की "ज़माने में हम",किश्वर नाहीये की "बुरी औरत की कथा", कौशल्या बैसंत्री का "दोहरा अभिशाप", पंजाबी लेखिका अजित कौर का "खानाबदोश", तस्लीमा नसरीन की तीन खण्डों में प्रकाशित 'मेरे बचपन के दिन',उताला हवा', और द्विखंडिता', मैत्रेयी पुष्पा की "कस्तूरी कुण्डल बसै' और गुड़िया भीतर गुड़िया आदि | मूलतः आत्मकथाएँ निजी जीवनानुभवों का लेखा-जोखा करनेवाला सच्चा दस्तावेज होता हैं | यूँ कहे तो आत्मकथा यानी भोगे हुए यथार्थ का सच्चा आंकलन हैं |

'कस्तूरी कुण्डल बसै'में मैत्रेयी पुष्पा ने अपने जीवन के शैशवावस्था से विवाह और विवाह के बाद एक बेटी के होने तक की कथा को अभिव्यक्त किया गया हैं | प्रस्तुत आत्मकथा में मैत्रेयी उसकी माताजी कस्तूरी देवी के अलावा एक और चरित्र एक गौरा भी हैं, जो कस्तूरी देवी की सच्ची साथी है | कस्तूरी देवी जिस परिवेश पैदा होकर यौवन की दहलीज पर पैर रखती है | मूलतः वह परिवेश अत्यंत गरीब एवं अभावग्रस्त था | जहाँ खाद्यान्न तथा मवेशियों के साथ-साथ लड़कियाँ भी बिकती है | कर्ज का भुगतान समय पर न कर पाने की वजह से कस्तूरी को आठ सौ सिक्के में एक अधेड़ से विवाह कर के बेचा गया था | पौराणिक सोच एवं रूढ़िवादी परंपरा को कायम करते हुए, कस्तूरी का विवाह संपन्न होता है | जिनके फलस्वरूप कस्तूरी देवी को एक बेटी होती है | नवजात कन्या का नामकरण भी परंपरा के साथ जोड़कर याज्ञवल्क्य ऋषि की पत्नी मैत्रेयी के नाम पर से रखा जाता है |

कालांतर में कस्तूरी देवी वैधव्य अवश्य प्राप्त करती है, किन्तु वैधव्यग्रस्ता उनकी कमजोरी न बनकर, उनके लिए हौंसले की उड़ान साबित होती है | "मनुष्य परिस्थितियों का दास है" इस कथन को सिद्ध करने एवं अपने आत्मसम्मान को बरकरार रखने हेतु, वह नौकरी करती हैं | वह कहती है कि –"क्या कोई साथ देगा ? देगा तो मुझे लज्जाशील मानेंगे लोग" ? (१) वास्तव में मैत्रेयी जी के दृष्टिकोण से उनकी माताजी का व्यक्तित्व स्वयं में नारी चेतना की प्रतिकृति ही लगती है | व्यावहारिकता एवं मानदंडों के अनुसार खेत जितना उपजाऊ होगा, फसल उतनी ही दमदार और मूल्यवान सिद्ध होगी | यहाँ कस्तूरी देवी के चरित्र से ही मैत्रेयी जी का व्यक्तित्व निर्माण हुआ है | यूँ कहे तो गलत नहीं होगा कि एक माँ ही अपनें बच्चों के भविष्य की निर्माता बनती हैं | परन्तु विभिन्न सन्दर्भों में मैत्रेयी पुष्पा और उनकी माँ कस्तूरी देवी वैचारिक धरातल पर दोनों एक-दूसरें के प्रतियोगी की भूमिकाओं में दृष्टव्य होते हैं | अमूमन इनकी सशक्त वजह स्त्री देह हो सकता है | बाकायदा मैत्रेयी जी का बचपन असुरक्षित और अस्थायी परिवेश में व्यतीत हुआ था | पुरुषों की कामुक और वासनामय दृष्टि

का शिकार बार-बार होना पड़ा था | जैसे-"सड़क पर ट्रक चलानेवाले ड्राइवर,गोश्त मंडी का कासिम कसाई और डी.बी.इन्टर कोलेज के प्रिन्सिपाल से लेकर क्लर्क तक ने हाथ आजमाने की जुर्रत की थी" | (२)

यौन-विषयक संवाद वास्तव में गोपनीयता का मुद्दा हैं, किन्तु नारी चेतना,स्त्री-विमर्श के माध्यम से लेखिकाओंने प्रस्तुत विषय को साहित्यिक धरातल पर बड़े खुले मन से उछालने की साहसिकता दिखाई हैं | नारी शरीर के नग्नतायुक्त परिदृश्य को मैत्रेयी जी ने पूर्णतया साहसिकता से अभिव्यक्त किया है | सिकुर्रा, खिल्ली में बड़ी हुई मैत्रेयी पुष्पा को समाज या स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों का जितना गहरा अनुभव होता हैं | उतना सुरक्षा के रक्षा कवच में पली-बड़ी लड़कियों को जीवनभर नहीं हो सकता हैं | कई युवा लड़कों के प्रति उनके मन मंदिर में प्रेम अवश्य जाग्रत होता है | गोकुल, बरसाना और नंदगाँव के प्रभाववश उनके मस्तिष्क में चुलबुलापन भी चलता है | अत: वास्तव में दैहिक और मानसिक जरूरतों को पूर्णतया अधिकार से माँगनेवाली लड़की के रूप में दृष्टव्य होती हैं | मैत्रेयी नारीवाद का समर्थन अवश्य करती है, किन्तु पुरुष विरोधी धरातल पर कदापि नहीं | जीवनानुभवों से पुख्ता हुई लेखिका सामाजिकता के दृष्टिकोण से समानता माँग अवश्य करती हैं | इसी वजह से कालेज में पढ़नेवाली मैत्रेयी से मकान मालिक इसी बात पर आपति जताता है कि उसके सहपाठी उनके रूम में क्यों आते है? इन्हीं आजाद रवैयें के कारण कस्तूरी देवी विवश और बेबस हो जाती है | जैसे-"माँ क्या करे? पछता रही है कि बेटी को लड़की की लज्जा क्यों नहीं सिखाई? माँए लड़कियों की जिस चेष्टा से पाल रही है, मैत्रेयी को उन्होंनें क्यों नहीं पाला? कस्तूरी जैसी बेटी निकली है मगर, उसके गन्ध-सुगन्ध पर इतने पहरे,जितने कि पुराने जमाने में उस पर नहीं थे | (३)

पौराणिक मान्यताओं और दकियानूसी संस्कारों के चलते आज भी भारतीय पुरुषप्रधान समाज स्त्री जाति को गुलाम समझता रहा हैं | वैवाहिक संस्कारों एवं मान्यताओं की दुहाई देकर पुरुष वर्ग आज भी स्त्री का शारीरिक और मानसिक शोषण करता हैं | नवीनतम वैचारिक क्रांति की स्वतंत्र पहल के चलते नारीवादियों ने समानाधिकार का परचम लहराया हैं | साथ-ही विवाहिक संस्था में पुरुषों के एकाधिकारी रवैया का कड़ा विरोध भी किया है | 'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथा में कस्तूरी देवी मैत्रेयी जी को शिक्षा के पश्चात नौकरीशुदा नारी के रूप में देखना चाहती थी | लेकिन मैत्रेयी जी विवाह को पुरुषों की कामुक वासनाओं भरी दृष्टि से मुक्ति का सरल मार्ग समझती है | जैसे-"माताजी मेरी शादी कर दो | मेरी स्वाभाविक इच्छाओं को कठोर उपवास में मत बदलो | मैं अपनी इन्द्रियों को कसते-कसते दूसरों की हवस का शिकार हुई जाती हूँ"| (४) भावुक एवं व्यावहारिक पहलुओं को लेकर माँ-बेटी में अमूमन भावात्मक अनबन चलती रहती थी | वास्तव में दोनों एक-दूसरें के प्रतिस्पर्धक बनकर उभरते थे |

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते आहार,निद्रा और मैथुन मूलभूत जरुरत है | मानव ह्रदय में कामवासना विद्यमान होना स्वाभाविक एवं सहज है | बाल्यावस्था में आँखों से देखी हुई और कानों से सुनी हुई, संभोग की उतेजित कहानियों का विस्तृत स्वरूप युवावस्था में अवश्य ही पनपता हैं | विशेषतौर पर महिला लेखिकाओं ने अपनी साहित्यिक लेखनी से नारी शरीर की जिस्मानी परतों को नग्नता की धरातल पर बेनकाब किया हैं | पुष्पाजी ने अपनी आत्मकथा साहित्य में यौनकामनाओं के दमन पर उत्पन्न होने वाले दुष्परिणाम से आगाज भी किया हैं | जब गौरा कस्तूरी का दृष्टांत देकर मैत्रेयी को विवाह करने से रोकने का प्रयत्न करना चाहती है | तो मैत्रेयी कहती है कि-" माँ से कौन-सी सीख लूँ ? यही कि मर्द की जगह कोई औरत ढूँढ लूँ ?"(५) पुष्पाजी ने अपनी आत्मकथा में सामाजिक,यौन हिंसा और यौन विषयक अत्याचारों जैसे गंभीर संवेदनशील मुद्दों को साहसिकता से उजागर किया हैं | दरअसल स्त्री विवाहिक बंधन में बंधकर पति और उसके परिवार से तो अवश्य बच जाती है किन्तु स्त्री होने की सजा समाज उसे सभी परिवेश मेंएवं सभी स्थानों पर अवश्य देता हैं | मैत्रेयीजी ने आत्मनिर्भर होना का पाठ कस्तूरी देवी से अवश्य सिखा था | किन्तु आत्मनिर्भर होने के लिए संघर्षरत रहना स्वयं से सिखा है | तक़रीबन मैत्रेयी जी यौन-उत्पीडन को सहते-झेलते हुए,विवाहिक संस्थाओं में सुरक्षा की कामना करती दृष्टव्य होती है | माँ की नोकरी में पदोन्नति हो इसलिए स्वयं को उच्च अधिकारियों को समर्पित करने में हिचकिचाती नहीं हैं |मैत्रेयी आत्मकथा में अपनी माँ से कहती है कि-"बी.डी.ओ.साहब से कहना, तुम्हें जिला संयोजिका (महिला)बनवाने की बात पर गौर करें | मैं सर्किट हाउस में मिलूँगी"| (६) वैसे तो,मैत्रेयी ने नारी उत्थान के साथ-साथ यौनक्रान्ति को जोड़कर नारी चरित्र को अलग पहचान दी है | यूँ तो नारी उत्थान के अक्स में मैत्रेयीजी माँ कस्तूरीदेवी भी कदम-कदम पर पुरुष की कामुक वासना का शिकार अवश्य बनी है |

आत्मकथा जैसे सजीव विषय के परिप्रेक्ष्य में कहना हो, तो वह जीवन की प्रतिकृति न होकर जीवन का सजीव अनुकरण है | पुष्पाजी ने अपनी आत्मकथा के विभिन्न पहलुओं शतप्रतिशत सच्चाई की धरातल पर आंकलन का साहसिक प्रयास किया है | चाहे वह, मटरगश्ती का किस्सा हो या चाहे देह-सेक्स से संबंधित गोपनीयता का हिस्सा क्यों न हो | काम, भोग-विलास मानव देह में समान रूप से उत्पन्न होनेवाले मनोविकार है | मैत्रेयीजी ने परिस्थितिजन्य विवशता या स्वैच्छिक यौनाचार से वश होकर कई पुरुषों से दैहिक सम्बन्ध स्थापित करती है | जब मैत्रेयीजी अपने मंगेतर को पहली बार मिलती है, तब उसे पूर्व में पुरुषों जुड़े संबंधों के स्मृति चिहन अवश्य दृष्टिपात होते है | जैसे –"उन्हें क्या पता कि मैत्रेयी ने जब उनका चेहरा देखा था, तब राघव का ध्यान आया था, चिकनाहट कुछ ऐसी थी | वे आए तो लगा युद्ध का सेनानी शिवदयाल आया, पदचाप से धोखा हुआ था | बाँहों के बंधन वे बाज बहादूर से उधार लाए थे| अलकी झलकी हूँ बहू नन्दकिशोर की" | (७)

दाम्पत्य जीवन में कामावेश की आग उनकी लचीले बदन की अवश्य जलती है | किन्तु पति की असमानता युक्त वैचारिकता से त्रस्त होकर, एवं पति के पुत्र प्राप्ति की मंशा से वाकेफ होते हुए, वह कहती है कि-"मेरे पति भी अपने वंश और पीढियों के प्रति खुद को सत्यानाश का अपराधी मान रहे है| यह क्या हो गया? जो पुरुष स्वयं इस बच्ची का पिता होने में हिचक मान रहा हो, उसे वह पति भी कैसे माने?" (८) वास्तविक जीवन में बाल्यावस्था से लेकर यौनाचार के प्रपंच को प्रत्यक्ष अनुभव करने के पश्चात् सतेज हुई मैत्रेयीजी ने स्त्री के लिए समानाधिकार और मानवाधिकार के प्रति सतर्कता से नारे जागरण का बीड़ा उठाया था | आत्मकथा के अन्य स्त्री पात्र निशिखरे और शकुन के प्रसंगों से स्त्री की सामाजिक हैसियत का करारा बोध कराया गया है| मूलतः भारतीय जनमानस की रुग्णता ही नारी शोषण की

जड़ है | महिलाओं और दलितों को राजनीतिक मुखोटे बनाकर अपनी राजनीतिक रोटियाँ शेकने वाले, लोगों के लिए यह लोग उपभोग की चीज-वस्तुएँ से ज्यादा कुछ नहीं है| राजनेताओं और मंत्रीमंडल भी औरत जात को शोषित बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार के षड्यंत्र को निर्मित करते रहते है | किन्तु कस्तूरी देवी जैसी सशक्त और जाग्रत नारी औरत को मूर्ख, कमजोर और अज्ञान –नादान समजने वाले लोगों के खिलाफ कड़ा संघर्ष करती दिखलाई पड़ती है| वह पितृसत्तात्मक समाज के विरुद्ध औरत को समानाधिकार प्राप्त करवाने के लिए अग्रसर रहती है |

संस्कृति और विरासत के आँचल में लपेटी हुई, आत्मकथा मैत्रेयी पुष्पा को नारी-विमर्श का प्लेटफार्म अवश्य प्रदान करती है | साथ ही में वह पुरुष वर्ग का सिर्फ न विरोध करती है, बल्कि वैवाहिक संस्कारों को भी आहत करती हैं | दरअसल उक्त आत्मकथा पुरुष की वर्चस्ववादी सोच को तोड़ती और समानाधिकार की भावना को कायम करती है | साथ ही पुरुष प्रधान समाज की परंपरागत वैचारिकता का खंडन भी प्रस्तुत करती है |

सन्दर्भ सूचि :

१- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा ३१
२- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा ९१
३- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा १८९
४- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा ५९
५- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा १०९
६- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा ८०
७- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा २४८
८- कस्तूरी कुण्डल बसै - मैत्रेयी पुष्पा ३१३